आलसी जैक
और खामोश राजकुमारी

मिशेल मोटोमोरा

चित्र: रोसने लिट्ज़िंगरे

हिंदी: छाया भदौरिया
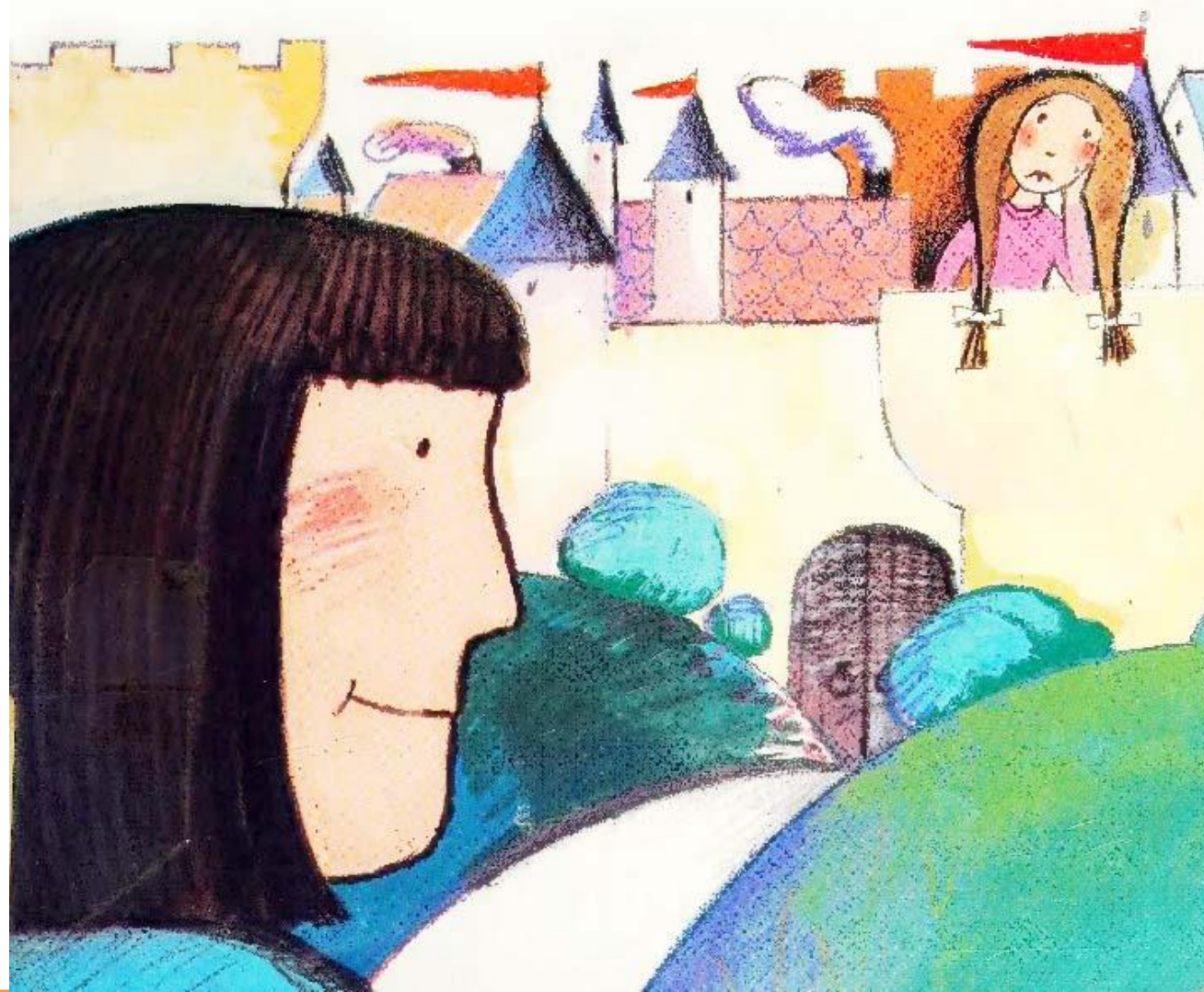
बहुत समय पहले की बात है। एक राजा और रानी थे। उनकी एक प्यारी-सी राजकुमारी थी जिसका नाम था मेलिसा। सभी लोग उसे खामोश राजकुमारी के नाम से बुलाते थे क्योंकि किसी ने भी उसे बोलते और हँसते हुए नहीं देखा था। इस बात को लेकर राजा और रानी बहुत ही चिंतित थे और अपनी बेटी का इलाज़ करवाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने देश के सर्वश्रेष्ठ डॉक्टर को बुलाया।

डॉक्टर ने कहा, "काश कोई एक बार राजकुमारी को हँसा दे, तो वह कभी भी हँस और बोल सकती है।"

राजा और रानी वर्षों तक उसे हँसाने का प्रयास करते रहे लेकिन सभी प्रयास विफल हुए और वह सालों साल उदास और चुप ही बनी रही।

जब राजकुमारी मेलिसा 18 साल की हुई तब राजा ने अपने दरबार में सभी लोगों को एकत्रित किया और उनसे कहा, “आप सभी लोग मेरी बेटी की दुखद स्थिति के बारे में जानते हैं। कोई भी नवयुवक यदि मेरी बेटी को हँसाने में सफ़ल हो जाएगा तो मैं राजकुमारी का विवाह उससे कर दूँगा और अपनी राजगद्दी उसे सौंप दूँगा।”

बहुत से नवयुवकों ने आकर राजकुमारी को हँसाने की कोशिश की। उनमें से कुछ लोगों ने चुटकुले सुनाए। कुछ ने मजाकिया चेहरे भी बनाए। लेकिन सभी लोग खामोश राजकुमारी को हँसाने या बुलवाने में नाकामयाब रहे।
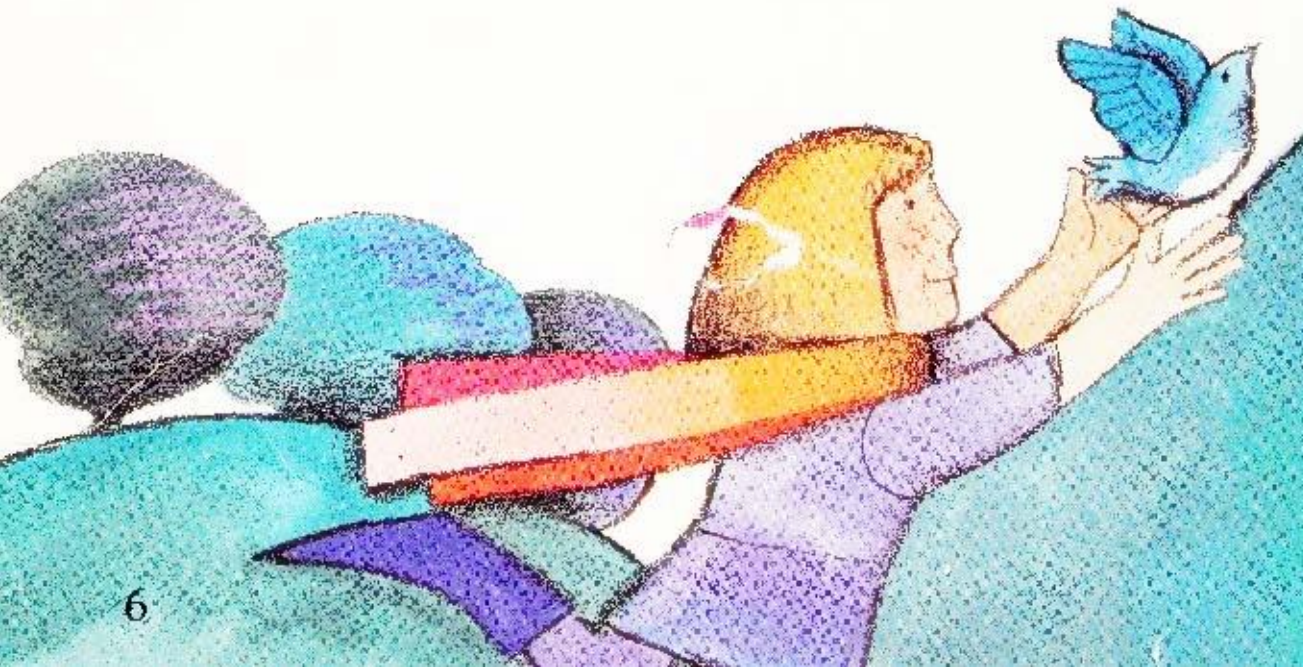
एक नवयुवक था जो राजकुमारी मेलिसा को हँसाने नहीं आया था। उसका नाम था जैक। वह कभी कोई काम ही नहीं करता था इसलिए लोग उसे आलसी जैक कहकर पुकारते थे।

गर्मियों में जैक बाहर धूप में बैठता था। सर्दियों में वह अंदर आग के पास बैठता था। गर्मी हो या सर्दी, जैक की माँ ही छोटे से घर में सारा काम करती थीं।

फिर एक दिन ऐसा आया कि बेचारी बूढ़ी माँ काम के बोझ को सहन नहीं कर पाई। उसने कहा, अरे! आलसी जैक, अब समय आ गया है कि तुम भी कुछ काम-धंधा ढूँढ़ लो।”

इस प्रकार सोमवार को जैक एक किसान का काम करने खेत पर चला गया। उसने पूरा दिन काम किया।

आख़िर में किसान ने कहा, "अब तुम घर जा सकते हो, जैक।" और उसने जैक को उसके काम का एक पैसा दिया।

जैक ने पैसा लिया और घर के लिए चल दिया। चलते-चलते वह पैसा उछालने लगा।

ऊपर! नीचे! ऊपर! नीचे! उफ़! जब तक जैक घर पहुँचा उसका वह एक पैसा खो गया था।

उसकी माँ ने कहा, “आलसी जैक! क्या होगा तुम्हारा? तुम्हें इसे अपनी जेब में रखना चाहिए था!”

अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा," जैक ने कहा।

मंगलवार को किसान ने जैक को एक जग दूध देकर उसके काम का भुगतान किया। जैक को पिछली बार माँ की कही हुई बात याद आई। इसलिए उसने दूध का जग अपनी जेब में रखा और घर के लिए चल दिया।

जैसे ही जैक ने चलना शुरू किया, दूध उसकी जेब में गिर गया। छप! छपा छप!

छप छप! जब तक जैक घर पहुँचा, उसके पास सिर्फ़ जग ही बचा था।

उसकी माँ ने कहा, “आलसी जैक! क्या होगा तुम्हारा? तुम्हें इसे अपने सिर पर रखना चाहिए था!”

अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा," जैक ने कहा।
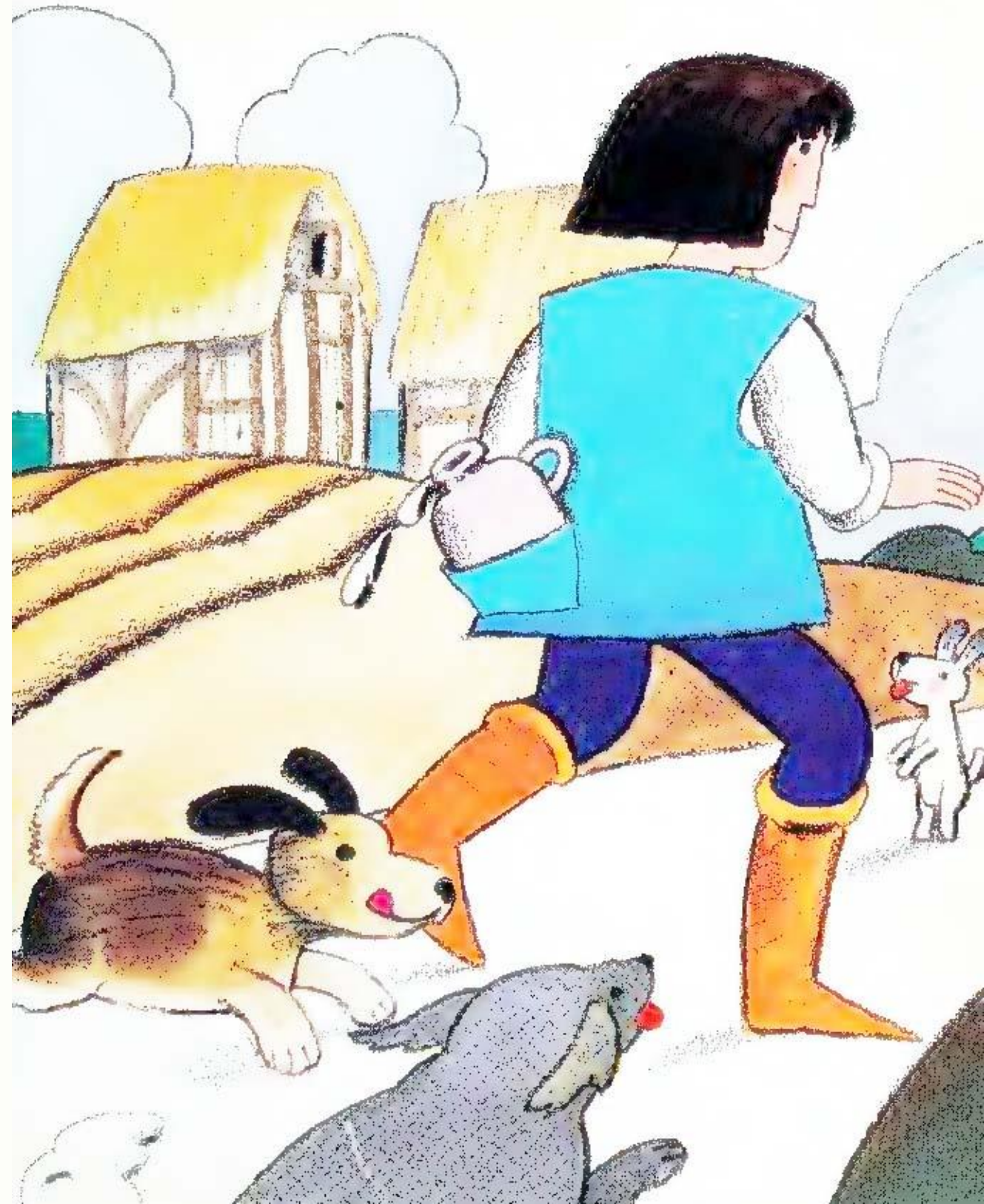
बुधवार को किसान ने जैक को मक्खन देकर उसके काम का भुगतान किया। जैक को फिर से माँ की कही हुई बात याद आई। इसलिए उसने मक्खन को अपने सिर पर रखा और घर के लिए चल दिया।

जैसे ही वह तेज़ धूप में चला, मक्खन पिघलना शुरू हो गया। टप! टप! टप! जब तक जैक घर पहुँचा, तब तक तो सब मामला गड़बड़ हो चुका था।

उसकी माँ ने कहा, “आलसी जैक! क्या होगा तुम्हारा? तुम्हें इसे अपने थैले में रखना चाहिए था!”

अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा," जैक ने कहा।

गुरुवार को किसान ने जैक को एक भूरी बिल्ली देकर उसके काम का भुगतान किया। जैक को फिर से माँ की कही हुई बात याद आई। इसलिए उसने बिल्ली को अपने थैले में रखा और घर के लिए चल दिया।

जैसे ही जैक चला, बिल्ली ने थैले से बाहर निकलने की कोशिश करते हुए उसे नोंचा और काटा। मियांउ! मियांउ! मियांउ! जब तक जैक घर पहुँचा, उसके पास केवल एक छेद वाला थैला ही बचा था।

उसकी माँ ने कहा, “आलसी जैक! क्या होगा तुम्हारा? तुम्हें इसे रस्सी से बाँधकर घर ले जाना चाहिए था!”

अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा," जैक ने कहा।

शुक्रवार को किसान ने जैक को मांस का एक टुकड़ा देकर उसके काम का भुगतान किया। जैक को फिर से माँ की कही हुई बात याद आई। इसलिए उसने मांस के टुकड़े को एक रस्सी से बाँधा और घर के लिए निकल पड़ा।

जैसे ही जैक चला, मांस सड़क की धूल से टकराकर लथपथ हो गया। धड़! धड़! थम्प! थम्प! जब तक जैक घर पहुँचा, उसके पास ऐसा मांस का टुकड़ा बचा था जो खाने लायक ही नहीं था।

उसकी माँ ने कहा, “आलसी जैक! तुमने पाँच दिनों तक काम किया। लेकिन तुम्हारे पास अपने काम को दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है! क्या होगा तुम्हारा? तुम्हें इसे अपनी पीठ पर रखकर घर ले जाना चाहिए था!”

अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा," जैक ने कहा।

शनिवार को किसान ने कहा, "जैक, तुमने पूरे सप्ताह बहुत अच्छा काम किया है।" और उसने खुश होकर जैक को एक गधा दिया!

बेचारा जैक! उसने फिर से सोचा कि उसकी माँ ने क्या कहा था। इसलिए, उसने गधे को उठाया, अपनी पीठ पर लादा और घर के लिए चल दिया। जैसे ही जैक चला, गधे ने उसे लात मारी और रेंकने लगा। ढेंचूँ! ढेंचूँ! ढेंचूँ!

गधे को अपनी पीठ पर ले जाना बहुत ही मुश्किल काम था! लेकिन जैक अपनी माँ को खुश करना चाहता था, इसलिए वह नहीं रुका।
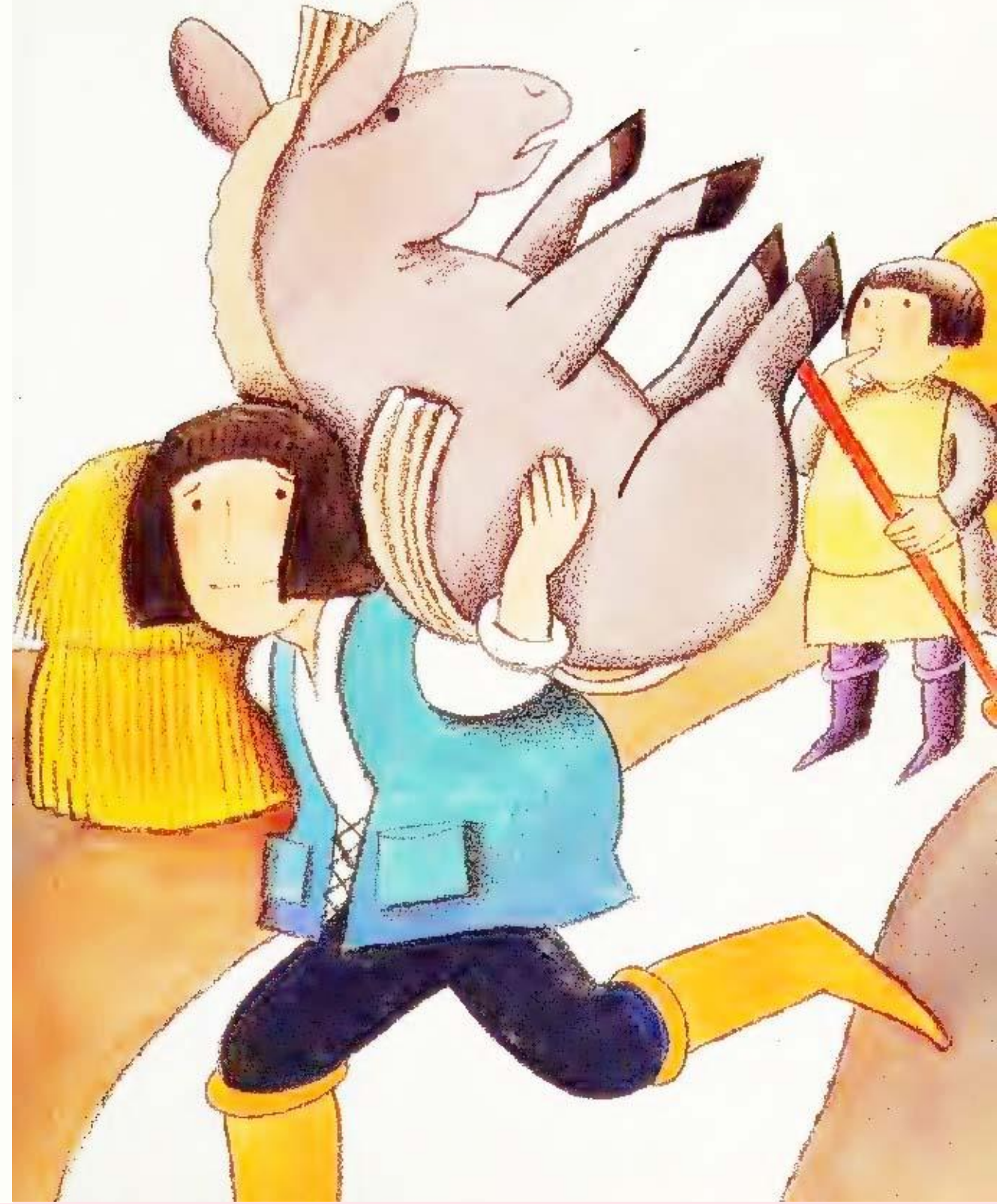
जल्द ही, जैक राजा के महल के सामने से होता हुआ गया। जैसे ही जैक राजकुमारी मेलिसा के पास से गुजरा उसने जैक को देखा।

और जब उदास व खामोश राजकुमारी मेलिसा ने जैक को अपनी पीठ पर गधा ले जाते हुए देखा, वह और उदास व चुप नहीं रह सकी! उसने एकदम से हँसना शुरू कर दिया! और फिर बोली!

"माँ, पिता जी, जल्दी आइए! वह कितना मजाकिया दिख रहा है!"
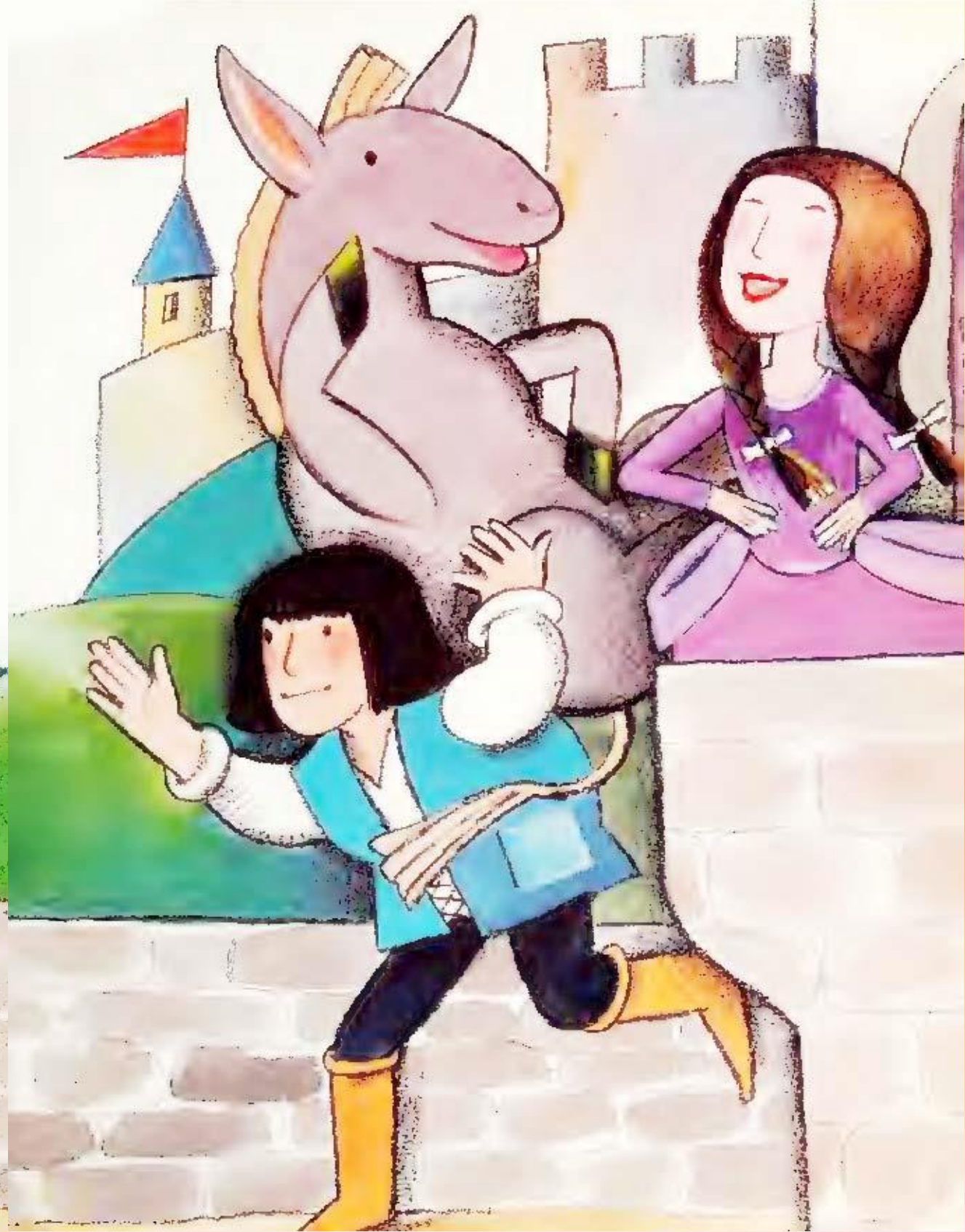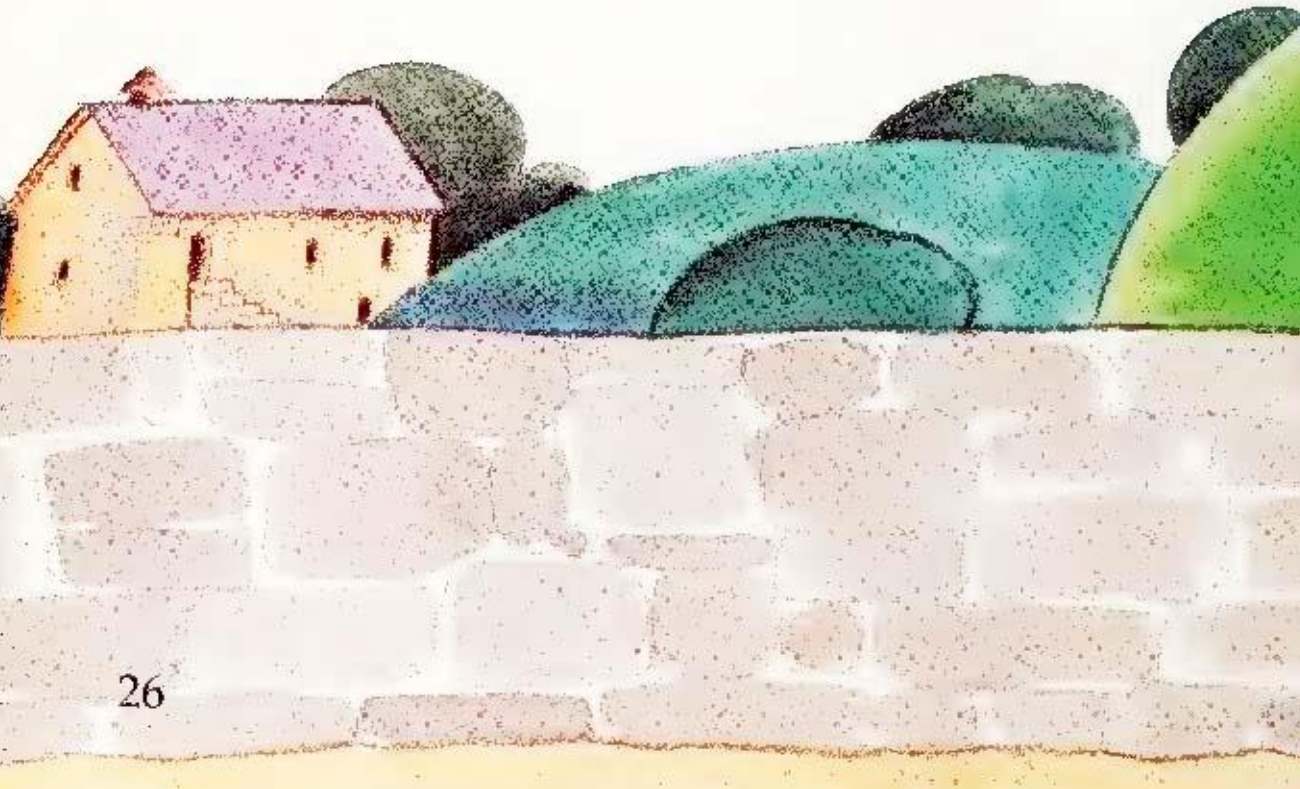
राजा और रानी मेलिसा के पास भागे-भागे गए। उन्होंने उसे चूमा और प्यार किया। राजा और रानी इतने खुश थे कि उस दिन वे सभी जैक को खुशखबरी सुनाने के लिए उसके घर गए।

उसे देखते ही राजा ने कहा, “वाह, मेरे बच्चे! तुमने कर दिखाया।”

जैक ने कहा, “हाँ, मुझे पता है कि मैं गधे को घर ले आया और अब मेरे पास सप्ताह भर का काम दिखाने के लिए कुछ तो है!”

नहीं, नहीं,” रानी ने कहा। "आप तो अगले राजा बनेंगे!"

और, तभी मेलिसा ने कहा। "मैं तुम्हारी पत्नी बनना चाहूँगी!"
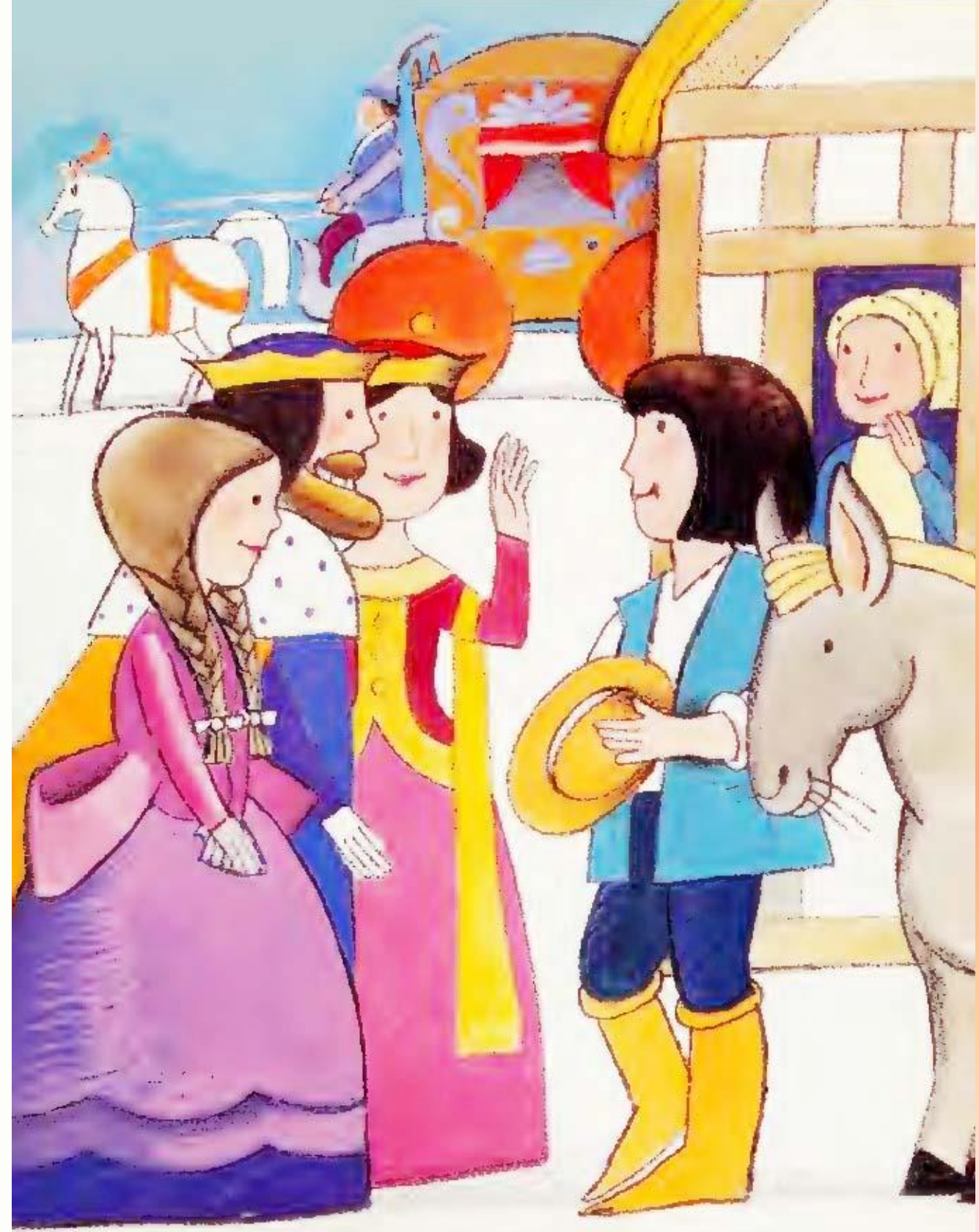
और इस तरह रविवार को मेलिसा और जैक का विवाह हो गया।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, एक समय उदास और चुप रहने वाली राजकुमारी मेलिसा खुश और बुद्धिमान रानी बन गई। उसने अच्छा शासन किया।

जैक भी खुश था। उसने अधिकतर काम मेलिसा पर छोड़ दिया। एक बार फिर, वह गर्मियों में धूप में और सर्दियों में चूल्हे के पास बैठा। लेकिन अब, कभी-कभी जैक के बच्चे उसके साथ बैठते थे। तब जैक उन्हें इस तरह की कहानियाँ सुनाता था।

और यही आलसी जैक की ज़िन्दगी बन गई!